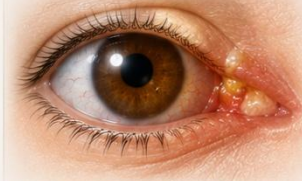

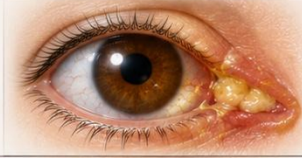
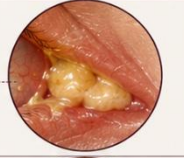

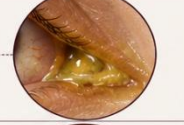




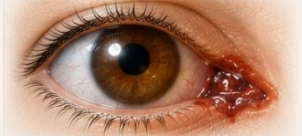

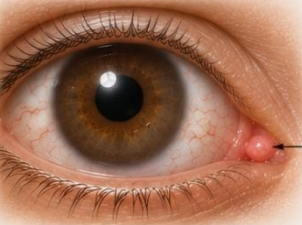
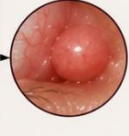




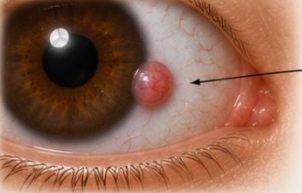
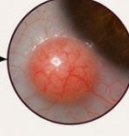
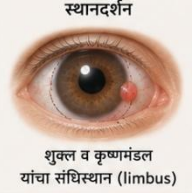
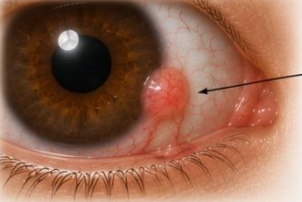
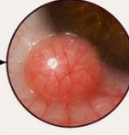

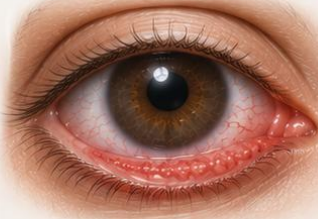











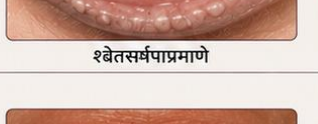


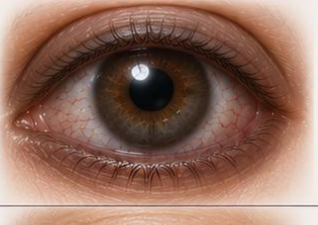








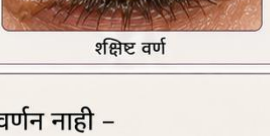



## Image Gallery – Netra Roga















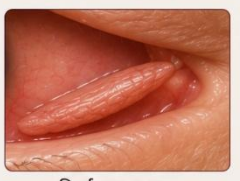
### संधिगत व्याधि







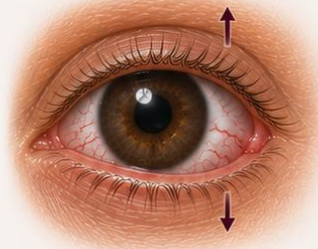



पुयालस	<p><b>1. पुयालस</b> (त्रि + र)</p> 	<p>सु - पक्वशोफ, स्रवेत सान्द्र पूय</p> <p>शोफ उत्पत्ति → पाक → पुय निर्मिती →</p> <p>वा - शोफ सरंभपूर्णक ब्रण, पुयस्राव</p> 
पुयस्त्राव	<p><b>2. पुयस्त्राव</b> (त्रि + र)</p> 	<p>सु - पाक + संस्रवेद्यच्च पूयं</p> <p>वा - पुय + अस्र, त्वक मांसपाक</p> 
पित्तस्त्राव	<p><b>3. पित्तस्राव</b></p> 	<p>सु - पीताभासनील, उष्णजलाभं</p> 
जलस्त्राव	<p><b>4. जलस्राव</b></p> 	<p>वा - जलाभं जलवाहिनी, अश्रुस्रवेत</p> <p>अ.सं - नेत्रमरुयागशोफम्</p> 
श्लेष्म स्त्राव	<p><b>5. श्लेष्मस्राव</b></p> 	<p>सु - कफ प्रकोप → श्वेत सांद्र पिच्छिल नीरुज स्राव</p> <p>वा - same</p> 
रक्तस्त्राव	<p><b>6. रक्तस्राव</b></p> 	<p>सु - रक्तप्रकोप → अतिसांद्र, सरक्त, उष्ण, न अल्प</p> <p>वा - रक्तं स्रवेत ताम्र बहुष्णम्</p> 
उपनाह	<p><b>1. उपनाह</b> <b>(K)</b></p> <p>स्थान - अंतःकोण (inner canthus)</p>  	<p>सु - निरुज, अल्पग्रंथी, अपाकी</p> <p>वा - शोफतीक्ष्णाग्र, क्षारबुदबुदकोपम् (बलवान क्षाराच्या खडयाप्रमाणे)</p>  <p>स्थानदर्शन अंतःकोण (inner canthus)</p>
कृमिग्रंथि	<p><b>2. कृमिग्रंथि</b> (त्रि + क)</p> <p>स्थान - पक्षमूल (पलक व पलकवाले केसांची जोड)</p>   <p>कृमि संचरन्तः</p>	<p>सु - कंडू, नानारूपावर्तशुक्तस्य, चरन्तो अन्नान्यन (कृमि नेत्राच्या आतबाहेर करतात)</p> <p>वा - कंडू, पक्षमपोटवान, पुयस्रावा</p> <p>मधुकोष -</p>  <p>मधुकोषोपमा</p>
पर्वणी	<p><b>3. पर्वणी</b> <b>(R)</b></p> <p>स्थान - शुक्ल व कृष्णमंडल यांचा संधिस्थान (limbus)</p>  	<p>सु - ताम्रातन्वी, वृत्तशोफ, रक्ताज्ञेया</p> <p>वा - शुक्ले, मुदुगोपमा, ताम्रा, भिन्न रक्ता</p>  <p>स्थानदर्शन शुक्ल व कृष्णमंडल यांचा संधिस्थान (limbus)</p>
अलजी	<p><b>4. अलजी</b> (त्रि + र)</p> <p>स्थान - शुक्ल व कृष्णमंडल यांचा संधिस्थान (limbus)</p>  	<p>सु - पर्वणीची पुढची अवस्था</p> <p>वा - शोफ, रूक, दाह</p> <p>मधुकोष - गोस्तनाकृती</p>  <p>गोस्तनाकृती</p>

## वर्त्मगत व्याधि

उत्संगिनी	<p><b>1. उत्संगिनी</b></p>  <p>अधोवर्त्मगत, अंतर्मुखी बाह्यउत्सेध पिडका (वेदनारहित)</p>	<p>सु - अधोवर्त्मगत, अंतर्मुखी बाह्यउत्सेध पिडका (वेदनारहित)</p> <p>वा - रक्ता रक्तेन पिटिका</p> <p>विदेह निमी - स्रवेत कुक्कुटाण्डरसोपमम्</p>	 <p>रक्ता रक्तेन पिटिका</p>  <p>कुक्कुटाण्डरसोपमम् स्राव</p>
कुम्भिका	<p><b>2. कुम्भिका</b></p>  <p>कुम्भबीज प्रतिभा, अधमापयन्ति (पुन्हा-पुन्हा येतात)</p>	<p>सु - कुम्भबीज प्रतिभा, अधमापयन्ति (पुन्हा-पुन्हा येतात)</p> <p>वा - कृष्णाचित्तेन, कुम्भिकाबीजवत अधमापयेत</p> <p>विदेह निमी - दाडिमफलाकारफला</p>	 <p>कुम्भिकाबीजवत</p>  <p>दाडिमफलाकारफला</p>
वर्त्मशर्करा	<p><b>3. वर्त्मशर्करा</b></p>  <p>सूक्ष्मअभिधन अभिसंवृत्ता (पिडिकेभोवती वालूप्रमाणे), द्रवसंचिती, खर</p>	<p>सु - सूक्ष्मअभिधन अभिसंवृत्ता (पिडिकेभोवती वालूप्रमाणे), द्रवसंचिती, खर</p>	 <p>द्रवसंचिती, खर</p>
सिकतावर्त्म	<p><b>4. सिकतावर्त्म</b></p>  <p>सिकतोपम पिडका, वर्त्मच्या आत, खर, रूक्ष</p>	<p>वा - सिकतोपम पिडका, वर्त्मच्या आत, खर, रूक्ष</p>	 <p>सिकतोपम पिडका</p>
पोथकी	<p><b>5. पोथकी</b></p>  <p>रक्तसर्षपाप्रमाणे, कंडू, स्राव आदि</p>	<p>सु - रक्तसर्षपाप्रमाणे, कंडू, स्राव आदि</p> <p>वा - श्वेतसर्षपाप्रमाणे</p>	 <p>रक्तसर्षपाप्रमाणे</p>  <p>श्वेतसर्षपाप्रमाणे</p>
बहलवर्त्म	<p><b>6. बहलवर्त्म</b></p>  <p>समवर्णी सम पिडका</p>	<p>सु - समवर्णी सम पिडका</p> <p>वा - same</p>	 <p>समवर्णी सम पिडका</p>
श्याव वर्त्म	<p><b>1. श्याव वर्ण</b></p> 	<p>सु - वर्ण बाह्यतोउन्तश्च श्यावं</p> <p>वा - श्याव + रुक्क्लेद शोफवत</p> <p>विदेह - अग्निदग्ध सन्निभम्</p>	 <p>श्याव वर्ण</p>
वर्त्मावबंधक	<p><b>2. वर्णावबंधक</b></p> 	<p>सु - वर्णशोफेन न समं छादयेत अक्षि (वर्णशोथाने डोळा पूर्ण झाकला जात नाही)</p>	 <p>वर्णावबंधक</p>

क्लिष्टवर्त्म	3. क्लिष्टवर्त्म		सु - ताम्रवर्णी, अस्माकश्च भवेत रक्तं विदेह - बंधुजीवनिभ वर्ण (जपापुष्पा प्रमाणे)		क्लिष्टवर्त्म
वर्त्मकर्म	4. वर्णकर्म		सु - क्लिनमापन्न उच्यते (क्लिष्टवर्माची next stage) वा - कृष्णं तु कर्म		वर्णकर्म
उत्क्लिष्ट वर्त्म	5. उत्क्लिष्टवर्त्म		वा - अनुत्क्लिष्टं, अकस्मात् म्लानता मियात (पुन्हा पुन्हा वृद्धि क्षय)		उत्क्लिष्टवर्त्म
पित्तोत्क्लिष्ट	6. पित्तोत्क्लिष्ट		वा - स्पर्शनाक्षमम्, रक्ताभ (tenderness)		पित्तोत्क्लिष्ट
कफोत्क्लिष्ट	7. कफोत्क्लिष्ट		वा - स्तंभक्लेद उपदेहवत्		कफोत्क्लिष्ट
रक्तोत्क्लिष्ट	8. रक्तोत्क्लिष्ट		वा - स्पर्शनाक्षमम्, राजीमत् (सिरा दिसणे)		रक्तोत्क्लिष्ट
श्लिष्टवर्त्म	9. श्लिष्ट वर्ण		वा - श्लिष्टाख्यावर्तर्मीनी (डोळे उघडता येत नाही), कंडू, शोथ, राग		श्लिष्ट वर्ण
कुकुणक	<p><b>कुकुणक</b> (त्रि + र)</p> <p>सु - वर्त्मगत व्याधिमध्ये वर्णन नाही - सु. उ 19 अध्यायमध्ये स्वतंत्र वर्णन - मृद्गति, अतिकंडू, सूर्यप्रभा न सहते</p> <p>वा - दंतोत्पत्तीव्याधि, ताम्राक्षो विक्षणाक्षम, कर्णनासाक्षि मर्दन, वर्त्मपैच्छिल्य</p> <p> वर्त्मगत व्याधि</p> <p> मृद्गति</p> <p> अतिकंडू</p> <p> सूर्यप्रभा न सहते</p> <p> दंतोत्पत्तीव्याधि</p> <p> ताम्राक्षो विक्षणाक्षम</p> <p> कर्णनासाक्षि मर्दन</p> <p> कर्णनासाक्षि मर्दन</p> <p> वर्त्मपैच्छिल्य</p> <p><b>स्वरूप (सार)</b> वर्त्मच्या काठावर लहान, तांबूस, गोलसर, मूदू आणि खाज सुटणारी पिडका दिसते. प्रकाश सहन होत नाही, डोळ्यात जळजळ व अश्रू येणे हे लक्षण असू शकते.</p>				



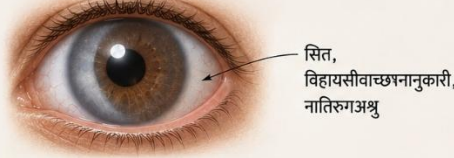



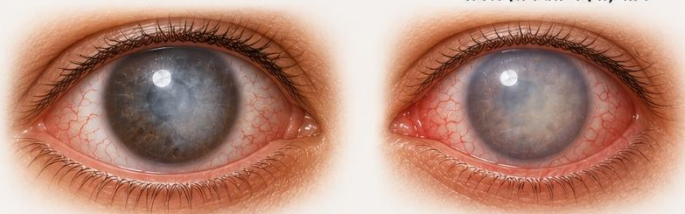
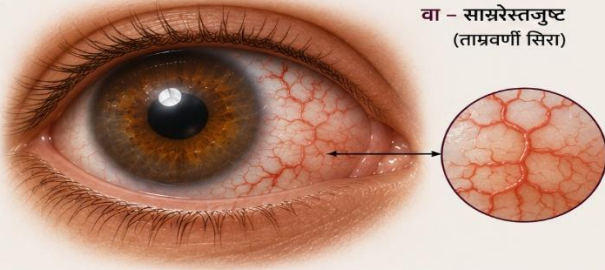

अंजननामिका	<p><b>1. अंजननामिका</b> (त्रि + र) स्थान - वर्त्म (पापणी)</p>  <p>सु - ताम्रपिडका, मृद्व्री (मुद्राप्रमाणे), दाह-तोद, मंदरुजा वा - मध्ये वा वर्त्मनोऽन्ते, ताम्र, मृद्व्रमात्रा, असृजा</p>  ताम्रपिडका  मुद्राप्रमाणे (मृद्व्री)
लगण	<p><b>2. लगण</b> (त्रि + र) स्थान - वर्त्म (पापणी)</p>  <p>सु - कोलप्रमाण, अपाक, कठिन वा - पाक, पांडूवर्णी</p>  कोलप्रमाण  पाक, पांडूवर्णी
बिसवर्त्म	<p><b>3. बिसवर्त्म</b> (त्रि + र) स्थान - वर्त्म (पापणी)</p>  <p>सु - शुनं यद् वर्त्म, बहुभि सूक्ष्मछिद्रे, बिसमन्तर्जल (पाण्यात बुडणारे मृणालप्रमाणे) वा - बहिः शूलं, अंतर्जल (साव)</p>  बिसमन्तर्जल (मृणाल प्रमाणे)  अंतर्जल (साव)
अर्बुद	<p><b>1. अर्बुद</b> K स्थान - वर्त्मगन्तर (पापणीच्या आतील भागात)</p>  <p>सु - वर्त्मगन्तरस्य, अवेदनम्, पुसांनरक्तम् अवलंबितम् वा - वर्त्मगन्तरस्य, मांसपिडाभ</p>  मांसपिडाभ
अर्शोवर्त्म	<p><b>2. अर्शोवर्त्म</b> R स्थान - वर्त्मगन्तर (पापणीच्या आतील भागात)</p>  <p>सु - एर्वारुबीजप्रतिमा पिडका, मंदवेदना डल्हण - अन्त व बाह्य तिष्ठति</p>  एर्वारुबीजप्रतिमा पिडका
शुष्कार्श	<p><b>3. शुष्कार्श</b> R स्थान - वर्त्मगन्तर (पापणीच्या आतील भागात)</p>  <p>सु - दिर्घाकूर, स्तभ्य, दारुण</p>  दिर्घाकूर, स्तभ्य

वाताहत	<p><b>1. वाताहत</b></p> <p><b>R</b></p> <p>स्थान - वर्त्मगन्तर (पापणीच्या आतील भागात)</p>  <p>सु - विमुक्तसंधि, निचेष्ट, वर्त्मयस्य न मिल्यते (पापण्या मिटता येत नाहीत), सरुजं वा नीरुजं</p> <p>वा - same</p>  <p>विमुक्तसंधि, निचेष्ट - पापण्या मिटता येत नाहीत</p>  <p>वर्त्मयस्य न मिल्यते</p>
शोणितार्श	<p><b>2. शोणितार्श</b></p> <p><b>R</b></p> <p>स्थान - वर्त्मगन्त (काठ) व विशेषतः अंतरिक भागात</p>  <p>सु - मृद्द्रो अंकुरा, छिन्नाछिन्ना विवर्धते (कापल्यावर पुन्हा पुन्हा वाढतात)</p> <p>वा - अधिमांस वर्त्मगन्त, रक्तं रक्तेन तत्स्रावी, छिन्नं छिन्नं वर्धन्ते</p>  <p>छिन्नाछिन्ना विवर्धते</p>  <p>रक्तं रक्तेन तत्स्रावी</p>
निमेष	<p><b>3. निमेष</b></p> <p><b>V</b></p> <p>स्थान - सिरामध्ये (वर्त्मगन्तर्गत)</p>  <p>सु - निमेषाणी सिरामध्ये वातप्रकोप → चलयत्यति वर्त्मगणी</p> <p>वा - चालयन वर्त्मगनि</p>  <p>चलयत्यति वर्त्मगणी</p>
कुंचन	<p><b>4. कुंचन</b></p> <p><b>यो.र. / भा.प्र</b></p> <p>स्थान - वर्त्म (पापणी)</p>  <p>सु - वर्त्मसंकोच, द्रष्टुं न शक्नोति (दिसत नाही)</p>  <p>वर्त्मसंकोच - द्रष्टुं न शक्नोति</p> <p>टीप - वरील व्याधी वर्त्म (पापणी) संबंधी आहेत.</p>

## शुक्लगत व्याधि

व्याधि	Reference Image
प्रस्तारी अर्म	<p><b>प्रस्तारी अर्म के भेद</b></p> <p><b>सु (उत्कृष्ट)</b>      <b>वा (हीन)</b></p> <p>1. प्रस्तारी अर्म (सु - त्रि ; वा - R) <b>R</b></p> <p>तनुस्थीरग्रभ सनील विस्तीर्ण</p> <p>मृदु आशुर्वद्ध श्याव लोहित</p>
शुक्लार्म	<p>2. शुक्लार्म <b>K</b></p> <p>वर्धते चिरेण शुक्ल / समवर्ण</p> <p>चिरवृद्धि अधिमांसकम्</p>
लोहित अर्म	<p>3. लोहितार्म / शोणितार्म / क्षतजार्म <b>R</b></p> <p>पद्माभम्</p> <p>पद्माभम् अधिमांसकम्</p>
अधिमांस अर्म	<p>4. अधिमांस <b>त्रि</b></p> <p>यकृतप्रकाशं श्याव विस्तीर्ण मृदु बहल</p> <p>शुष्कासृकपिण्डवत् श्याव</p>
स्नायु अर्म	<p>5. स्नाय्वर्म <b>त्रि</b></p> <p>पिशित उपैति वृद्धि शुक्ल</p> <p>स्नायुसंनिभम्</p>
शुक्तिका	<p>1. शुक्तिका <b>P</b></p> <p>श्याव पिशितनिभ बिंदु शुक्ताभ्यां</p> <p>मलाकरादर्श तुल्य</p>
पिष्टक	<p>2. पिष्टक <b>K</b></p> <p>उत्सन्न सलिलनिभं शुक्ल सुवृत्तबिंदु</p>
बलासग्रथित	<p>3. बलासग्रथित <b>K</b></p> <p>कांस्याभ सिते अम्बुबिंदुतुल्यं अमृदु अरूजा</p> <p>सवर्ण स्निग्धअम्बुवत् बहल मृदु अरूज</p>
अर्जुन	<p>4. अर्जुन <b>R</b></p> <p>शशमधिरोपम् बिंदु</p> <p>नीरूक श्वक्षण शशलोहितलोहित बिंदु</p>
सिराजाल	<p>5. सिराजाल <b>R</b></p> <p>कठिनसिरा सरकसंतान</p>
सिराजपिडका	<p>6. सिराजपिडका <b>त्रि</b></p> <p>सितपिडका सिरावृत्ता</p> <p>सर्षपोपमा दाहघर्ष</p>

# कृष्णगत व्याधि

<p>सव्रण शुक्र</p>	<p>सव्रण शुक्र (R) / क्षत शुक्र (R)</p>  <p>विदेह</p> 
<p>अव्रण शुक्र</p>	<p>अव्रण शुक्र (R) / शुद्ध शुक्र (K)</p>  <p>उपप्रकार -</p> <div style="display: flex; justify-content: space-around;"> <div data-bbox="375 571 790 817"> <p>1) अच्छधनानुकारी - विहाय आकाश इव डल्हण - प्रतनुमेघखंडानुकारी</p>  </div> <div data-bbox="798 571 1460 817"> <p>2) बहल - गंभीरजात, चिरोस्थित, द्वितीय पटलाश्रित</p>  <p>वा - शंखं शुक्लं, नातिरुग मा. नि - स्यंदात्मक, शंखइंदुकंदुप्रतिभा, विहाय स अश्रुप्रतनुप्रकाश</p> </div> </div>
<p>अजकाजात</p>	<p>1. अजकाजात (सु, वा - R डल्हण - K)</p> <p>सु - अजापूरीषप्रतिमो, रुजावान, लोहितपिच्छिलअश्रु</p> <p>विदेह - अजकायमेदोवत (तृतीय पटल)</p> <p>छागलीवितसम प्रभ</p>  <p>दुष्प - रक्त + मेद</p> <p>अजापूरीषप्रतिमो अजकायमेदोवत छागलीवितसम प्रभ</p>
<p>अक्षिपाकात्यय</p>	<p>2. अक्षिपाकात्यय त्रि</p> <p>सु - संच्छाद्यते श्वेत (कृष्णमंडलावर श्वेत आवरण), तीव्ररुजा</p> <p>वा - सर्वगत व्याधिमध्ये वर्णन - दर्शन संरोध, सरंभ, कलुषाश्रुता, प्रक्लेदरागवत वेदना, शोफ</p> 
<p>सिराशुक्र</p>	<p>1. सिराशुक्र त्रि + R</p> <p>वा - साम्ररेस्तजुष्ट (ताम्रवर्णी सिरा)</p>  <p>तोड अनिमित्त शीत / उष्ण अच्छ स्राव (पातळ, जलमिश्रित) घन स्राव (गढा, श्लेष्ममिश्रित) तीव्र वेदना</p>
<p>तीव्रवेदन</p>	<p>2. तीव्रवेदना त्रि + R</p> <p>वा - शुक्लरूपताम, धवलाभ पलिप्लामं, निष्पावाअर्धदलाकृति</p>  <p>अतितीव्र रुजा दाह शोथ</p> <p>अक्षिपाकात्यची next अवस्था</p>

# सर्वगत व्याधि

## 1. हताधिमंथ V

स्थान -  
वर्त्म (पापणी)



सु - 2 अवस्था -

A) सकलनयनशोषलक्षण =  
अधिमंथ उपेक्षा → नेत्रशोष  
(कोरडेपणा, शोष)

B) दृष्टिनिर्गमनलक्षण =  
वातप्रकोप → नेत्रउत्सेध →  
दृष्टि प्रतिक्षिपन → अधिमंथ  
(exophthalmus)

वा - दृष्टिहां

विदेह - उत्पद्ममिव संशुष्क  
(सुकलेला कमळ)

A) सकलनयनशोषलक्षण



नेत्रशोष (कोरडेपणा)

B) दृष्टिनिर्गमनलक्षण



नेत्रउत्सेध (exophthalmus)

विदेह



उत्पद्ममिव संशुष्क  
(सुकलेला कमळ)

## 2. वातपर्यय / वातविपर्यय V

स्थान -  
पक्षमद्रय, अक्षि,  
भू (जिथे वात संचारेल)



सु - पक्षमद्रय-अक्षि-भूव जिथे  
वात संचारेल तिथे वेदना

वा - नेत्र जिह्वता (वक्रता),  
नेत्रशोथ व शूल

नेत्र जिह्वता (वक्रता)



नेत्रशोथ



शूल (वेदना)



## 3. अन्यतोवात V

स्थान -  
अवटू (मन्यापार्श्व),  
शिर, हनु, कर्ण, मन्या



सु - अवटू (मन्यापार्श्व)-शिर-हनु-  
कर्ण-मन्या येथे वातवृद्धि →  
नेत्र / भू रूजा

वा - न व्यथा तीव्र, पैच्छिल्य,  
राग, शोफ,  
संकोचयती पर्यश्रु  
(अश्रुस्राव)

राग



शोफ



पैच्छिल्य



संकोचयती पर्यश्रु (अश्रुस्राव)



## 4. अन्लाध्युषित P

(सु - P;  
वा - PRप्रधान त्रि)  
स्थान -  
वर्त्म (पापणी)



सु - पित्तप्रकोप →  
नेत्रलोहित / नील वर्णी →  
शोफ

वा - श्यावलोहित,  
आविलदर्शन + शोफ, दाह

नेत्रलोहित / नील वर्णी + शोफ



श्यावलोहित, आविलदर्शन + दाह



## 5. हताधिमंथ (विदेह रूप) V

लक्षण -  
उत्पद्ममिव संशुष्क  
(सुकलेला कमळ)



विदेह - उत्पद्ममिव संशुष्क (सुकलेला कमळ)

नेत्रशोष, वातप्रकोप, दृष्टिहां - ही हताधिमंथांची विदेह रूपे.

संक्षेप - दोषानुसार

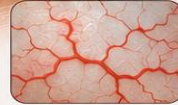
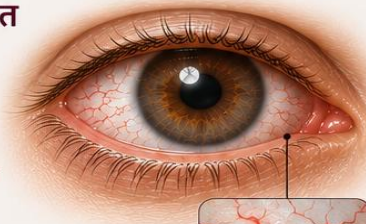
V - वातज P - पित्तज

R - रक्तज K - कफज

PR - पित्तरक्तज

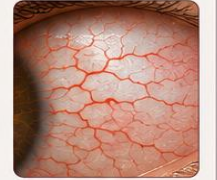
## 1. सिरोत्पात R

वा - शुक्लगत  
मध्ये वर्णन



सु - शुक्लमंडलावर शूलयुक्त/रहित  
ताम्र सिरा, मुहरविरज्यन्ति  
(अपोआप नष्ट होतात)

वा - शुक्लस्थान - रक्कराजितत,  
सवेदना, अशोफ अश्रु  
अपपदेह (?)



ताम्र सिरा

## 2. सिराहर्ष R

वा - शुक्लगत  
मध्ये वर्णन



सु - सिरोत्पात उपेक्षा →  
न शक्योत्यभिधीक्षितुं (blind),  
ताम्र अच्छ अस्र स्राव

वा - same



ताम्र सिरा व अस्र स्राव

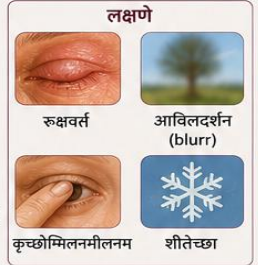
### 3. शुष्काक्षिपाक

(सु - VR  
वा - PV)



सु - कुण्ठितं दारुणं रूक्षवर्त,  
विलोकने च आविलदर्शन  
(blurr)

वा - दारुणं रूक्षवर्त, घर्षतोदाभेद  
उपदेहवत, कृच्छोम्मिलनमीलनम,  
शीतेच्छा



### 4. सशोफ अक्षिपाक

(सु - त्रि;  
वा - त्रिर)



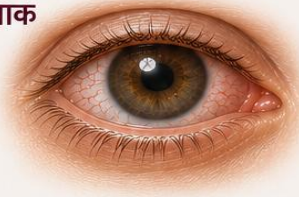
सु - पक्वउदुम्बरसन्निभम,  
उष्ण / शीत अम्बु साव

वा - पक्वउदुम्बर सकाश,  
अश्रुशीतविशदपिच्छिल



### 5. अशोफ अक्षिपाक

(सु - V;  
वा - V)



सु - शोफहिनांनी लिंगानी  
नेत्रपाके

वा - अल्पशोफे  
अल्पशोफस्तु

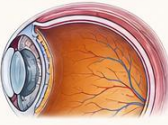









टीप - वरील व्याधी सर्वगत नेत्र व्याधी असून, दोषप्रकोप, उपेक्षा व कालानुसार लक्षणांची तीव्रता बदलते.

प्रकार	अभिष्यंद लक्षण	अधिमंथ लक्षण
V	<p>सु - शिशिराश्रुता, रोमहर्ष, स्पर्ष, शिरोभिताप, तोद, स्तंभन, पार्श्व, विशुष्कता</p> <p>वा - जंतुनामिव सर्पणम, सूक्ष्मै शल्येरिवाचितम, नासानाह, कृच्छउन्मेष, स्फुरण, वेदना</p>	<p>सु - मांससंरब्ध (शुन्यता), नेत्राविलता, नेत्रकुंचन, उत्पाटन, अरणीमंथन वेदना, संघर्ष, वेपथु, अधमान</p> <p>वा - कर्णयोनंदन, भ्रम, मंथनवत वेदना</p>
P	<p>सु - उष्णाश्रुता, शिशिराभिनन्दता, पीतनेत्र, दाह, पाक, धुमायन</p> <p>वा - क्षारोक्षितक्षताक्षिर्व (क्षार टाकल्याप्रमाणे), अंतक्लेदोऽश्रु पीतोष्णं, पीताभ दर्शन, श्यावता वर्त्मनो बहि</p>	<p>सु - रक्तराजीचितं स्राव, क्षारेणाक्तमिव क्षांतं, यकृतपिंडोपम वर्ण, वनहीवत दाह, पीतदर्शन, वर्त्मप्रान्तभागी शोथ</p> <p>वा - ज्वलद अंगार वर्ण, यकृत पिण्डसमप्रभ</p>
K	<p>सु - अक्षिशोफ, सिक्ता, अतिशैत्य, उष्णाभिनंदा, मृदुपिच्छिल स्राव</p> <p>वा - दूषिकाश्रुता, जाडय शोफमहान, कंडू, निर्दशता (वृद्धि), पिच्छिल स्राव</p>	<p>सु - पांशुपूर्णभिवाविलं, नासाधमान, रूपं पशति दूःखेन, शिरोशूल, हर्षणयुक्त</p> <p>वा - पांशुपूर्णभिवेक्षणम, उन्नतशुक्लमंडल, नत कृष्णमंडल</p> <p>विदेह - मलोपलिप्तता</p>
R	<p>सु - ताम्राश्रुता, लोहितनेत्रता, राजयसमन्ताद् अतिलोहिताश्च</p> <p>वा - रक्ताश्रु, राजीदूषिक शुक्लमंडल दर्शन, पित्तस्यंद लक्षण</p>	<p>सु - बंधूजीवप्रतीकाशं, स्पर्शनाक्षमम्, कृष्णभागे रक्तमम्रारिष्टाश्च, अग्निदुत्थवत वेदना</p> <p>वा - मन्येऽक्षिताम्रपर्यत, रागेनबंधूकनिभं ताम्यति, असूक निमग्नं अरिष्टाभं, उत्पाटनसम वेदना</p>

# दृष्टीगत व्याधि

## दृष्टिगत व्याधि अभ्यन्तर चार पटलाश्रित दोषदुष्टि

पटल	लक्षण	Trick / स्पष्टीकरण
<b>तेजोजलाश्रित</b> 	<b>सु</b> - अव्यक्तानि स रूपानि (blurr) डल्हण - तिमिर आरम्भक दोषस्य संप्राप्ति <b>वा</b> - अव्यक्तमीक्षते रूपं	आगीत / पाण्यात गेल्यावर पुढचे स्पष्ट दिसत नाही 
<b>मांसाश्रित</b> 	<b>सु</b> - • दृष्टिभृशं विव्हलति, • अभूत वस्तु दिसणे, • दृष्टिगोचर विभ्रमात (किडे), • सूचीपाशं न पशति (सुईमध्ये दोरा ओवता न येणे) <b>वा</b> - • तिमिर • हर्षस्ववृद्ध विपर्यय	
<b>मेदोग्रश्रित</b> 	<b>सु</b> - • उर्ध्व पश्यति न अधः (खालचे बघता येत नाही), • कर्णनासाअक्षि युक्तानि विपरीतानि (कर्ण इ. असूनही नसल्यासारखे वाटणे), • रंजकत्व • तिमिर • रूपानिच्छादित <b>वा</b> - • काच डल्हण - रागाप्राप्त तिमिरलाच काच म्हणतात	
<b>अस्थ्याश्रित</b> 	<b>सु</b> - तमोभूते, चन्द्रआदित्य अन्तरिक्षे च विद्यते   • लिंगनाश <b>वा</b> - • लिंगनाश	

टीप - वरील लक्षणे अभ्यन्तर चार पटलांमध्ये दोषदुष्टि झाल्यावर दृष्टिगत व्याधीमध्ये दिसणारी आहेत.

## तिमिर, काच आणि लिंगनाश

दोष	तिमिर लक्षण	काच लक्षण	लिंगनाश लक्षण
V	<b>सु</b> - 1) रूपानि भ्रमन्तिव, 2) अविल, अरूणाभ 3) व्याविधानी (वक्र) <b>वा</b> - 1) जलानि केशानि (जाळी, केश इ. दिसणे), 2) चलअविल, अरूणाभास, 3) व्याविद्ध	<b>सु</b> - 1) अरूणदुष्टिमंडल, 2) चंचल, 3) परुष <b>वा</b> - 1) पश्यति नास्य अनासिकम् 2) चन्द्रदीप अनेकत्वं	<b>सु</b> - 1) रजोधुमावृतमिव, 2) स्पष्टअरूणाभ, 3) हतदर्शन <b>वा</b> - 1) दर्शन नाशन, 2) चलपद्मिनीपुटसंस्थित जलबिंदु समान, इतर सुशुत समान वर्णन
P	<b>सु</b> - 1) आदित्य खडोत शक्र आभास (सूर्य, काजवा, इंद्रधनुष्या आभास होणे), 2) शिखीर्बहवाचिन्नाणि निलकृष्णानी <b>वा</b> - 1) शिखीतितर पिच्छाभ (मोर, तित्तिरच्या पिसाराप्रमाणे)	<b>सु</b> - मंडलनील, कांस्याभ्य अर्कइंदुपरिवेष्टा अग्नि मरिची इंद्रधनुषी च (प्रचलीत अग्नीच्या ठिणण्या)	<b>सु</b> - भृंगनीला, (निव्या भोंग्याप्रमाणे), निशलोका, स्निग्ध <b>वा</b> - 1) दृक निष्प्रभः, 2) हतदर्शनम्
K	<b>सु</b> - 1) रूपानि स्निग्धानि, 2) गौरचामरगौरानि (स्निग्ध व गौर दिसणे), 3) पश्येत सुक्ष्माण्य अत्यर्थ (छोट्या वस्तु मोठ्या दिसतात), 4) सलिलाप्लवित (पाण्यात पोहणे) 5) परिजाड्यानी (वस्तु जाड दिसतात), 6) व्यभे च एव अश्र संप्लवात (निरश्र आकाशात ढग दिसतात) 	<b>सु</b> - 1) शंखकुंदेइंदुपांडूरम्, 2) चलत्पद्म पलाशस्य (हलणारा कमळ / पलाश), 3) शुक्लोबिंदुरिवाभ्रस (पानावरील बिंदु), 4) संकुचित आतपे अत्यर्थः, छायायां विद्यता भवेत् (प्रकाशात संकुचित, अंधारात विस्तार), 5) मूढमान च नयने मंडल तद विसर्पति (नेत्र चोळल्यास वाढत जाते) 	<b>सु</b> - 1) शंख कुंद इंदु कुसुमैः कुमुदैः   (नेत्रामध्ये शंख, चन्द्र, कुंद, इ. व्याप्त असल्याप्रमाणे वाटणे) निष्प्रभ इंदु अर्क प्रदीपाथैः   (प्रभारहित सूर्य चंद्र) <b>वा</b> - 1) दर्शन नाशन, 2) चलपद्मिनीपुटसंस्थित जलबिंदु समान, इतर सुशुत समान वर्णन
R	<b>सु</b> - 1) हरितश्वाव कृष्णानि, धूमधुमानि चेशूकते 2) रक्ततमोमय वर्ण <b>वा</b> - रक्तं तमोभूतं च पश्यति व रक्तवर्णा दिसतात	<b>सु</b> - 1) प्रवालपद्म पत्राभं, 2) मंडलं शोणितात्मकम् दृष्टि रक्ता वा कृष्णा	<b>सु</b> - 1) दृक निष्प्रभः, 2) हतदर्शनम् <b>वा</b> - 1) दृक निष्प्रभः, 2) हतदर्शनम्
सन्निपातिक	<b>सु</b> - 1) चित्रानि विभ्रुतानि बहुधा द्विधा (वस्तु विचित्र व 2 किंवा त्यापेक्षा जास्त दिसतात), 2) हीन / अधिक अंग दिसणे, 3) ज्योतिष्यापि <b>वा</b> - संकीर्ण लक्षण	<b>सु</b> - चित्रविचित्र वर्णयुक्त चित्रो रागो प्रजायते (चित्रविचित्र)	<b>सु</b> - चित्रो रागो प्रजायते <b>वा</b> - चित्रो रागः प्रजायते
परिम्लायी/संसर्गज	<b>सु</b> - 1) रक्त + पित्त जन्म, 2) दिशा उदयन्त आदित्यमेव (सर्व दिशा उगवत्या सूर्यप्रमाणे दिसतात), 3) खडोते वृक्ष तेजोभिरेव (वृक्ष काजव्यानी व्याप्त) <b>वा</b> - same (परिम्लायीएवजी संसर्गज नावाचा वापर)	<b>सु</b> - 1) स्थूलकाचानल प्रभं, 2) दोषक्षयात कदाचित् स्यात् स्वयं तत्र अदर्शनम् चित्रो रागो प्रजायते (चित्रविचित्र)	<b>•• लिंगनाशाचे इतर प्रकार</b> आविल लिंगनाश    अंधकार लिंगनाश    धूम लिंगनाश    छाया लिंगनाश 

व्याधि	लक्षण	कारण / दोषस्थान	विशेष माहिती / टीप
<p><b>पित्तविदग्ध दृष्टि</b> (दिवांध)</p> 	<p>सु - पीतवर्णता (सर्व वस्तु पिवळ्या दिसतात)</p> <p>वा - same</p> <p>मधुकोष - दिवांध</p>	<p>तृतीय पटलात दोष (पित्त)</p>	<p>दिवा न पश्येत, पश्येत निशि (Day blindness)</p>  
<p><b>कफविदग्ध दृष्टि</b> (दोषांध)</p> 	<p>सु - सर्ववस्तु श्वेतवर्णी दिसतात</p> <p>वा - कफविदग्धलाच दोषांध असे म्हणले</p> <p>मधुकोष - नक्तांध</p> <p>विदेह - नक्तांधचे 4 प्रकार - 1) कफविदग्ध दृष्टि 2) धूमदर्शी 3) सहस्वजाडय 4) नकुलांध्य</p>	<p>तृतीय पटलात दोष (कफ)</p>	  <p>(night blindness)</p>
<p><b>धूमदर्शी</b> सु (वातादि) / धुमर (वा - पित्त)</p> 	<p>सु - शोकज्वर आयास शिरोभिताप हेतु → सर्व धूमवर्णी दिसते</p> <p>वा - same (धुमर या नावाने)</p>		
<p><b>सहस्वजाडय</b> <b>सहस्वदृष्टि</b> (पित्त)</p> 	<p>सु - दिवसेषु कुच्छात सहस्वानि (दिवसा मोठी वस्तु कष्टाने छोटी दिसते)</p> <p>वा - सहस्वदर्शना (वस्तु लहान दिसतात)</p> <p>डल्हण - चतुर्थ पटल आश्रित</p>		<p>मोठी वस्तु छोटी दिसते</p>   <p>सामान्य दृष्टि सहस्वदृष्टि</p>
<p><b>नकुलांध्य (त्रि)</b></p> 	<p>सु - दृष्टिदोषभिपन्ना नकुलस्य (मुंगुसाप्रमाणे दृष्टि), चित्ररूपानि दिवा स पश्येत</p> <p>वा - दिवा स पश्येत रात्रौ न पश्यति (night blindness)</p>		<p>दिवसा दिसते रात्रौ दिसत नाही</p>  
<p><b>गंभारिका</b> <b>गंभीर (V)</b></p> 	<p>सु - दृष्टिर्विरूपा, श्वसनौ उपसृष्टा, संकुच्यते अभ्यंतरश्च, रूजावगाढ</p> <p>वा - संकोचयती दृक् सिराः</p>		 
<p><b>अम्लविदग्ध दृष्टि</b> (त्रि + R)</p>	<p>वा - अत्याम्लसेवन → त्रि + रक्त प्रकोप → दृष्टि कलुषित + क्लेद + कंडू</p>	  	
<p><b>उष्णाविदग्ध दृष्टि</b> (त्रि + R)</p>	<p>वा - उष्णतप्त देह + शीत जल निमज्जन → दाह, अहनि (दिवस) अविळ दर्शन, रात्रौ अंधत्व (night blindness)</p>	   	

